स्वातन्त्र्य समर की वर्षगाँठ पर

किसी राष्ट्र को विनाश के कगार पर ले जाना हो तो जरूरी नहीं कि उसे सैन्य हमलों से ही रौंदा जाय। इसका एक और तरीका है, वह है उस राष्ट्र की संस्कृति को नष्टभ्रष्ट करके। इसका सबसे सरल माध्यम है कि उस राष्ट्र के - इतिहास एवंसांस्कृतिक परम्परा को विकृत कर दो। आजादी के बाद जिस कलम का उपयोग स्वराज्य को सुराज में बदलने में होना चाहिए था, वह अपने उद्देश्य से भटककर इस देश के इतिहास एवं परम्परा को विकृत करने की भूमिका बखूबी निभा रही है। सन् के स्वतंत्रता संग्राम ने हिन्दुस्तान 1857में एक नई चेतना का संचार किया था जिसने अंग्रेजों की सत्ता की जड़ें हिला दी थी। आज उस स्वतंत्रता संग्राम को विदेशी विचार व धन पर पोषित बिके हुए इतिहासकार स्वतंत्रता संग्राम मानने को तैयार नहीं हैं। एक साजिश के तहत सन् तक 1947 से लेकर सन् 1857 के कालखण्ड मेंस्वतंत्रता के लिए हुए प्रयत्नों का इतिहास लगभग अज्ञात सा कर दिया गया। जो ज्ञात भी था उसे प्रयत्नपूर्वक छिपाया गया। यह अत्यन्त दुःखद है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्ष बाद भी जनता अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष के 60 इतिहास से अनभिज्ञ सी है। उसे वास्तविक तथ्योंं से जानबूझकर दूर रखा गया है। लगातार एक ही राग "दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल" अलापा जा रहा है। स्वतंत्रता के संघर्ष में उस समय की कांग्रेस के योगदान को नकारा नहीं जा सकता लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि इनके अतिरिक्त अन्य प्रकार के प्रयत्नों को पूरी तरह से नकार अथवा उपेक्षित कर दिया जाय। लेकिन ऐसा ही हुआ है। स्वतंत्रता संघर्ष में महात्मा गांधी, पं. नेहरू एवं कांग्रेस के योगदान को तो महिमामण्डित कर बखान किया गया लेकिन शेष महापुरुषों और क्रान्तिकारियों के नामों को धीरे धीरे इतिहास व पाठ्यपुस्तकों से हटा-दिया गया। इतिहास को कैसे विकृत किया गया इसका एक उदाहरण समझने के लिए पर्याप्त है- मीर जाफर और जयचन्द इतिहास में किस लिये जाने जाते हैं? इस देश का बच्चाबच्चा -

जानता है कि जयचन्द का विश्वासघात ही राष्ट्रघात है। पृथ्वीराज चौहान राष्ट्रीय अस्मिता और वीरता के रूप में स्मरण किये जाते हैं, लेकिन पथभ्रष्ट एवं बेईमान - वामपंथी इतिहासकार न केवल जयचन्द को एक बहादुर की संज्ञा दे रहे हैं अपितु पृथ्वीराज चौहान को एक भगोड़े और डरपोक की श्रेणी में रखे हैं। यही नहीं इन वामपंथी इतिहासकारों ने धृष्टता की सारी सीमाओं को लाँघते हुए बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपत राय, महर्षि अरविन्द, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव जैसे महान क्रान्तिकारियों को भी उग्रवादी कहने में कोई संकोच नहीं किया। इन महान स्वतंत्रता सेनानियों को उग्रवादी कहना महापाप से कम नहीं। जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, आज तो इनका स्मरण करना तो दूर इनके कार्य से भी अनभिज्ञता प्रकट किया जा रहा है। हमने स्वतंत्रता संग्राम में इनके समर्पण को पूर्णतः भुला दिया। सन् 1857 का स्वतंत्रता संग्राम सत्ताच्युत राजाओं का सनक मात्र नहीं था। वह असफल भले ही हुआ हो पर भविष्य के लिए परिणामकारी भी रहा। सारी पाशविकता के बावजूद अंग्रेज हिन्दुस्तानी जनता की स्वतंत्रता प्राप्ति की इच्छा को दबा नहीं सके। स्वतंत्रता समर के क्रान्तिकारियों के सच को अगर जानना है तो यह सच आज भी अंडमान के सेलुलर जेल के दीवारों पर लिखा है। अहिंसा एवं धर्मनिरपेक्षता के नाम पर "बिना खड्ग एवं ढाल" के आजादी देने वालों का इतिहास तो हमने कई बार पढ़ा। काशइस देश की पाठ्यपुस्तकों में उन क्रान्तिकारियों का इतिहास भी पढ़ाया गया होता जिन्होंने सेलुलर जेल में बैलों की जगह कोल्हू से जोतकर दी गई यातना को भी आजादी के उन दीवानों ने हँसते हुए स्वीकार किया था। कहाँ गया वह इतिहास? कहाँ गयी हमारी वह विरासत? क्यों भुला दिया हमने वह इतिहास जिसके हर पन्ने पर स्वतंत्रता सेनानियों के खून के छींटे बिखरे हुए हैं? किन किताबों में पढ़ाया जाता है वह मंजर जब जलियावाला बाग जैसा हत्या काण्ड घटित हुआ था? जब चौरीचौरा काण्ड और डोहरिया की - ऐतिहासिक घटना घटित हुई थी। आजादी की लौ को तीव्र करने के लिए संन्यासी

विद्रोह की घटना कोकौन याद दिलायेगा? इस राष्ट्र की संस्कृति एवं इतिहास के साथ खिलवाड़ हो रहा है और पूरा राष्ट्र सोया पड़ा है। जो कार्य कभी अंग्रेज स्वतंत्रता संग्राम के महत्प्रयास की उपेक्षा तथा इतिहास के उस महत्त्वपूर्ण अध्याय के प्रति द्वेषपूर्ण रीति से घृणा का वातावरण निर्मित करते रहे, आज भी वह निरन्तर जारी है। आखिर ऐसा होगा भी क्यों नहीं? क्योंकि इन तथाकथित स्वयंभू इतिहासकारों का मसीहा मार्क्स सन् में स्वतंत्रता संग्राम पर स्वयं बारीक 1857 दृष्टि रखे हुए थे और पूरे समय अंग्रेजों का समर्थन कर रहे थे। उस मार्क्स को

अपने इष्टमानने वालों को उसकी हाँ में हाँ मिलाना ही है। इन वामपंथी इतिहासकारों से देशभक्ति की अपेक्षा करना ही व्यर्थ है। लेकिन एक सच्चे राष्ट्रभक्त के लिए तो वह हर महापुरुष एवं क्रान्तिकारी जिसने स्वातन्त्र्य लक्ष्मी की आराधना के इस महायज्ञ में अपनी आहुति दी, वे सभी वन्दनीय हैं। महान क्रान्तिकारी अप्रतिम देशभक्त वीर सावरकर ने तो यहाँ तक कहा कि "जिन लोगों में और कुछ करने का साहस अथवा सामर्थ्य नहीं था, पर अपनेअपने इष्ट देवों की - अभ्यर्थना करते समय उसके श्री चरणों में केवल इतनी प्रार्थना भर की हो कि मेरी मातृभूमि स्वतंत्र कर दो", उनका भी स्वतंत्रता प्राप्ति में स्थान है। इस राष्ट्र को अगर अपनी सम्प्रभुता एवं स्वतंत्रता को अक्षुण बनाये रखना है तो आज आवश्यकता है कि पुनः सन् तक के इतिहास का पुनर्लेखन 1947 से सन् 1857 करें। जिस दिन यह राष्ट्र अपने इस स्वाभिमान को पहचान लेगा उसी दिन अहिंसा और धर्मनिरपेक्षता के मसीहा जो प्रचार माध्यमों की बैसाखी के सहारे इस राष्ट्र की सनातन परम्पराओं को गुमराह कर रहे थे और सोया राष्ट्र उन्हें पूजित मानकर सम्मान कर रहा था, नग्न हो जायेंगे। यह सच तो तब सामने आयेगा ही साथ ही वे तथाकथित मसीहा भी बेनकाब हो जायेंगे। यह देश पुनः जाग्रत होगा, सच की अवश्य जीत होगी। यह हमारा अटूट विश्वास है।